भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 11 | रविवार, 26.11. 2000 | वार्षिक चंदा : 50.00

शतं जीव शरदः ..... प.पू. साहेब

- हे जशुभाई साहेब ! आप तो अनंत जीवों को भगवान भजवाने आए हो...
- ...आपके द्वारा अनेकों का कल्याण होगा...
- ... 2000 मुमुक्षुओं ने जन्म लिया है वे तुम्हें ढूंढते आएंगे...
- ... आप ब्रह्मविद्या की कॉलेज शुरू करो और ब्रह्मज्ञान देने लगो...
- श्रीजी महाराज-गुणातीत-शास्त्रीजी महाराज की महिमा दिगंत में फैलाओ। वह हमारा निशान है, तो लेकर लग पड़ो ! डंका बजेगा...
- ... आप सब युवकों को इकट्ठा करो और माहात्म्य की बातें करो, अंतर में ब्रह्मज्ञान का फव्वारा छूटेगा.... अखंड महिमा की बातें निकलेंगी...
- ... आप तो मेरा जीवनप्राण हो, रोज़ याद आते हो... आपके दर्शन के लिए खिंचाव रहता है...

–ब्र. स्व. गुरुहरि योगीजी महाराज

- साहेब बापा के पास ठहरावरहित गुरुमुखी वर्तें हैं।

–ब्र. स्व.काकाजी महाराज

- साहेब तो योगीजी महाराज की खुश्बू हैं, उनके द्वारा बापा का संकल्प पूरा हो रहा है। सारे सम्प्रदाय में वे वह फैला रहे हैं।
- संबंध से सभी को स्वरूप मानकर जीए–वो साहेब !

–प्र. ब्र. स्व. प.पू. पप्पाजी

- परमतत्त्व को रोम-रोम में धारण करने वाले योगीजी महाराज के संबंध में आने के बाद से साहेब को कभी भी मन, बुद्धि बाधारूप नहीं हुई।
- योगीजी महाराज ने खूब गरीबभाव रखा और साहेब ने वैसा ही गरीबभाव बापा के साथ रखा।

–प्र. ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

- बापा ने मेरा हाथ दादुकाका को सौंपा था।

–प्र. ब्र.स्व.प.पू. साहेब

- मैंने जब भी साहेब को देखा है तब मुझे एक ही शब्द याद आता है कि साहेब यानि–'अक्षरधाम का हंस' जो मोती का ही चारा चरता है। सारे समाज में उन्होंने हर एक के गुण और प्रसन्नता ही देखी है।
- साहेब को मैंने जब से देखा है तब से अब तक उनकी स्वरूपों के प्रति, संतों के प्रति की या युवकों के प्रति एक जैसी भावना दिखाई देती है।

–प.पू. गुरुजी

सच ! पूर्व के बलिष्ठ संस्कारों के कारण कहो या हमारे कई जन्मों के सुकृत उदय हुए कि बिना कोई साधना किए हमें प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब जैसी भगवान धारक गुणातीत विभूतियों की गोद मिल गई।

अहो हो.... प.पू. साहेब की हीरक जयंती का मंगल अवसर आया.... प.पू. साहेब की हीरक जयंती यानि–

- ✷ मन की गुलामी से मुक्त होने अखंड प्रभु की मूर्ति सभर रहने का दिन !
- ✷ हमारे स्वभाव-प्रकृति, अहंकार को-संत को अर्पण कर देने का दिन !
- ✷ अंतःर्दृष्टि करने का दिन !
- ✷ सभी प्रकार के अंतराय दूर करके प्रभु के नज़दीक आने का दिन !
- ✷ अज्ञान, अंधकार और अहंकार के पर्दों के पार बैठे प्रभु को पहचानने का दिन !

प.पू. साहेब जब से प.पू. बापा के संबंध में आए तब से बापा की आज्ञा को जीवन बनाया.... अपने समग्र तंत्र को बापा की अनुवृत्ति के रूप कर दिया। बापा के ही दिव्य स्वरूपों प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. प्रमुखस्वामिजी, प.पू.महंतस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, पू. भाई, पू. कांतिकाका, पू. सोनाबा सभी के साथ महिमा से ऐक्य स्थापित किया।

गुरुहरि योगीजी महाराज ने नवयुवकों की चेतना जागृत करके उसमें प्रभु की मूर्ति प्रगटाने का जब महायज्ञ शुरू किया तब–13 मई 1966 में बापा ने प.पू. साहेब को अमदावाद बुलाया और बोले कि–

'तुम्हें भगवा कपड़े नहीं देने–भागवती दीक्षा भी नहीं देनी। परन्तु, हृदय भगवा करना है। जैसे संसार में से साधु घर-बार छोड़ देते हैं वैसे तुम्हें घर-बार छोड़ कर इन्हीं कपड़ों में भगवान भजने हैं। काकाजी और पप्पाजी के साथ रहना !'

यह आदेश देकर बापा ने भेजा।

फिर गुरुहरि योगीजी महाराज ने 'विद्यानगर का छात्रालय'–जो कि प.पू. काकाजी की सेरेछाया में प.पू. साहेब व युवकों ने अत्यधिक परिश्रम करके बनाया था– छोड़ने कहा और प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी की निश्रा में प.पू. साहेब व युवकों को रहने की आज्ञा करी। तब उन्हें कुछ पता नहीं था कि क्या करना और कैसे करना ? परन्तु, बापा का असाधारण हेत, पू. बा का असाधारण वात्सल्यभाव, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी द्वारा मिला गुरुहरि योगीजी महाराज का अपरंपार माहात्मय, इन सब चीजों से जीवन में निश्चिंतता थी कि बापा साथ ही हैं, कोई तकलीफ नहीं पड़ेगी। प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, पू. बा की हूँफ इतनी अधिक मिली कि सभी युवक हंसते-खेलते प्रभु के रास्ते पर चलते रहे..... और सर्वप्रथम आठ युवकों–पू. अश्विनभाई, पू. शांतिभाई, पू. डॉ. सनंदभाई, पू. डॉ. वी.एस., पू. बैरिस्टर, पू. हर्षदभाई, पू. पूनमभाई, पू. रतिभाई ने प.पू. साहेब के साथ मित्रता का रिश्ता होते हुए भी एक निष्ठा से गुरुहरि योगीजी महाराज और प.पू. साहेब की एकरूपता स्वीकार कर सर्वस्व का कुर्बान करके योगीस्वरूप प.पू. साहेब की प्रसन्नता पाने का एकमात्र ध्येय रखा...'

एक बार पोषी पूनम के मंगलकारी दिन सभा में प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. बा आए और प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी बोले–

'आज पोषी पूनम है और गुणातीत का दीक्षा दिन है। आज व्रत लें कि प्रभु के होकर जीना है और प्रभु प्रसन्न हों इस भावना से सारी प्रवृत्ति करनी है।'

बस, इस आदेश के बाद सभा में व्रत दिया और तब से व्रतधारी भाईयों की नई पंखुड़ी की शुरूआत हुई.....

फिर एक दिन प.पू. पप्पाजी ने युवकों को कहा कि–

'तुम सब कर्मयोग करो, तुम्हें कुछ स्पर्श नहीं होगा– भगवान तुम्हारी रक्षा करेंगे।'

इस आदेश व आशीर्वाद के साथ युवक अभी भी कर्मयोग करते हैं और इनकी अनुपम एकता के फलस्वरूप आज आठ में से पूरा वटवृक्ष बन चुका है व वह वटवृक्ष का हर एक फूल जगत में रहते हुए हर प्रकार से कंचन-कामिनी का त्याग करके अपने वर्तन से अपनी खुशबू देश-विदेश में फैला रहा है।

अक्षरपुरुषोत्तम की शुद्ध उपासना को प्रवर्ताने में सहायभूत वर्तने प.पू. साहेब गुरुहरि योगीजी महाराज की योजना में लग पड़े और उसके फलस्वरूप ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करके योगीरूप ही बन गए... गुणातीत स्वरूप बन गये ! प.पू. साहेब– प.पू. बापा, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. बा सभी के साथ खूब माहात्म्य व सरलता से जीए। बड़े पुरुष में अटूट श्रद्धा रख कर उनकी आज्ञा शिरोमान्य रख कर– गुणातीतभाव को पा गए !

प.पू. साहेब की सहजता आज हर एक को स्पर्श कर जाती है। उन्हें नम्रता सहज सिद्ध है..... प.पू. काकाजी कहते **'साहेब मन रहित व्यक्ति हैं।'** मन को मार कर, मन को जीत कर या मन को मना-पटा कर जीने वाले व्यक्ति फिर भी मिलेंगे, पर मन रहित का व्यक्ति तो वही हो सकता है जिसने स्वयं में प्रतिपल साक्षात् ईश्वर प्रगट रखें हों !

स्वामी की बातों में एक बात है–**'जाकुं देखे छाती ठरे.... अर्थात् जिसे देखकर छाती में ठण्डक हो जाए.....'** प.पू. साहेब के प्रथम दर्शन से आज हर एक को ऐसी अनोखी ठण्डक मिलती है। जीवन में उजाला हो जाता है। नीरसता खत्म होती

है, भीतर में एक अनोखे सुख का एहसास होता है। इससे ही पता चलता है कि प.पू. साहेब ने प.पू. बापा का–गुणातीत स्वरूपों का कैसा अद्‌भुत सेवन किया होगा और कल्याणकारी गुण प्राप्त किए। प.पू. काकाजी एक बार बोले थे कि ब्रह्मज्योति की धूल भी महिमा गाती है.... इससे पता चलता है कि प.पू. साहेब ने किसी का दोष देखे बिना सभी में कैसा माहात्मय भरा होगा ! तभी तो उन्हें 'माहात्म्य सम्राट' कहा जाता है।

साहेब अपने जीवन की प्रत्येक पल स्वामीसेवकभाव से जीते हैं। साहेब को हम श्री ठाकुरजी के दर्शन करते देखें, साहेब को उनकी नित्यपूजा करते देखें, साहेब को श्री ठाकुरजी को थाल धराते हुए देखें, साहेब को माला फेरते हुए देखें, साहेब को कीर्तन गाते, मंत्र लिखते, ध्यान करते, कथा करते हुए देखें और सुनें तो हमारे अंतःचक्षु साहेब के स्वामीसेवकभाव का दर्शन कराएंगे। साहेब संतों के सामने झुकते हैं, स्वरूपों की वंदना करते हैं, हरिभक्तों को मिलते हैं; साहेब बालकों में घुलमिल जाते हैं और युवकों के चैतन्य की घड़ाई करते हैं– ऐसे सभी में श्रीहरि निहार कर उनकी गोद में सिर रख कर सेवक के सेवक होकर वर्तते हैं।

यूं, प.पू. साहेब यानि–श्रीजी के कार्य के ज्योतिर्धर... उनकी माहात्मयभरी जोशीली वाणी से उनके सामने आया मुक्त चिन्तामुक्त हो जाता है। उनकी सिंह गर्जना जैसी वाणी जड़ चैतन्यों को जागृत करके प्रभु के रास्ते पर चलने की प्रेरणा बल-मार्गदर्शन देती है... सच में– प.पू. साहेब का जीवन अद्‌भुत है।

प.पू. साहेब भले ही युवा समाज के सूत्रधार हैं, लेकिन गुणातीत समाज के आबाल-वृद्ध सभी के ध्रुवतारक भी हैं। आज देश-विदेश के कई युवक एवं गृहस्थ भी उनकी निश्रा में कलयुग की कीचड़ से अलिप्त होकर प्रभुपरायण जीवन जी रहे हैं। यूं शास्त्रीजी महाराज द्वारा प्रवताई शुद्ध युगल उपासना के पोषक गुरुहरि योगीजी महाराज के वारिसदार बन कर संबंध में आई अनेक चेतनाओं के वे उद्धारक, प्राणाधार, पथप्रदर्शक बने हैं...

ब्रह्मज्योति पर साधना करते युवकों के चरित्र, संयम आदि गुणों युक्त जीवन देख कर सभी को सहज प्रश्न उठता है कि ओहो ! ये ऐसे हैं तो प.पू. साहेब–इनके चैतन्यशिल्पी कैसे–कितने समर्थ होंगे ? इस नए वैज्ञानिक युग में जीते हुए युवकों के दिल-दिमाग में स्थान लेना और उन्हें अपने पीछे लट्टू बना लेना वह केवल प्रभु रखी विभूति द्वारा ही संभव है।

प.पू. साहेब अनेक चैतन्यों को आध्यात्मिक प्रगति तो करवा ही रहे हैं, पर साथ-साथ सामाजिक उत्थान, संस्कार सिंचन, नैतिक उत्थान, कई शैक्षणिक एवं आरोग्य संस्थाओं द्वारा अत्यधिक तीव्रता से गतिशील हैं। यूं आध्यात्मिक युगपरिवर्तन आज प.पू. साहेब कर रहे हैं।

संक्षिप्त में कहें तो **<u>प.पू. साहेब</u>** यानि–

- बापा की सभी आज्ञा बुद्धि लगाए बिना शिरोमान्य रख कर पाली; तो फलस्वरूप स्वयं बापारूप–गुरुरूप ही हो गए... भगवान उनमें अखंड निवास करके रहे।
- कभी किसी व्यक्ति, पदार्थ, प्रसंग, शक्ति या गुण के कारण बापा के साथ संबंध टूटने नहीं दिया। उन्होंने कभी बापा को मजबूर नहीं किया।
- बापा के साथ के अनन्य संबंध के कारण उनके जीवन में कभी ज्वार-भाटे नहीं आए–निरंतर हँसता मुखारविंद !
- केवल गुरुमुखी ! बापा को कभी भी 'नो' शब्द नहीं कहा...
- सरलता का स्वरूप-महिमा का स्वरूप ! बापा के पास प.पू. साहेब अस्तित्वरहित जीए.....
- उनका जीवन सहजताभरा ! प.पू. साहेब का विशेष गुण-खुले दिल से कहना और स्वीकारना। इन दोनों का अद्‌भुत समन्वय उनके जीवन में दिखाई पड़ता है। उनका व्यक्तित्व यानि– निर्मल झरना... किसी प्रकार का दंभ या आडंबर नहीं।
- पक्ष का मूर्तिमान स्वरूप ! स्वामिनारायण के अल्प संबंध वाले की बुराई सुननी, उन्होंने कभी भी चलने नहीं दी। बापा का बल–निष्ठा का ही बल, अपनी बुद्धि का नहीं-शक्ति का नहीं।

प.पू. साहेब का एक सूत्र है–**<u>'थींक पोज़ीटीव, रेस्ट विल फॉलो यू'।</u>**

तो, हे साहेब आप हमें ऐसा बल देना कि हमारे जीवन में महिमा और श्रद्धा में कभी ज्वार-भाटे ना आएं और आप जैसे गुणातीत पुरुषों के जीवन की ओर निरन्तर नज़र रखकर-पोज़ीटीव थिंकींग रख कर भजन-प्रार्थना का ही एकमात्र उपाय लेकर सुखी-सुखी हो जाएं।

हे साहेब ! आपका धूलेन्डी के मंगलकारी दिन पर प्रगट होना अपने आप में खूब सांकेतिक है। हम सब के जीवन में अपना संबंध देकर हमारी चेतना को प्रभु के रंगों से भर देने ही आपका धरती पर प्रागट्य हुआ है.... तो ऐसे प्राणाधार समान गुणातीत स्वरूप प.पू. साहेब को हीरक जयंती के मंगल अवसर पर कोटि-कोटि वंदन सह प्रार्थना कि आप निरोगी स्वास्थ्य से खूब वर्षों तक हमारे बीच अपनी निर्दोष हंसती मूर्ति के दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देते रहना और प्राकृत मूल्यांकनों से परे जाकर हम आपके स्वरूप को पहचान पायें !

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

अन्नकूट कृपा प्रसाद

....अन्नकूट उत्सव ! अन्नकूट के फंक्शन को हम हमारा ईयरली गेट-टु-गेधर भी कहते हैं। इसमें आज वच्छराज ने एक बहुत अच्छी बात कही। यह बात अलग ढ़ंग से मुंबई-ताड़देव से निकले हुए दिवाली के कार्ड में है कि भई ज्ञान तो हम बहुत जान चुके हैं। लेकिन, अब इसको जीवन में एप्लाई करके उसके रिज़ल्टस पाने हैं....। कोई भी प्रॉब्लम हो-भजन करो, हल हो जाएगा, सोल्यूशन निकलेगा-यह हम जानते हैं। लेकिन जब भी कोई प्रसंग बनता है, हम लोग हब्बे-गब्बे हो जाते हैं, बेबस हो जाते हैं, चिंतित हो जाते हैं, एक्साईट हो जाते हैं; रो पड़ते हैं या गुस्से में आ जाते हैं। जैसे-जैसे हर एक का नेचर, वैसे-वैसे ही उसका रीएक्शन आता है। उसके बजाय... आखिर कुछ नहीं चलती है तब फिर हम भजन करने बैठते हैं और तब फिर सारी माया शांत होकर सारा सेटिंग भी हो जाता है। तो आज के दिन एक छोटी-सी बात कर लेते हैं, जो हमें सारे साल में काम आए। यहां हम जो आए हैं या नहीं भी आ पाए लेकिन ये संबंध हुआ है, वे सब एक बात सूब विश्वास से पक्की लेकर जाएं कि –

संत के माध्यम से प्रभु के डायरेक्ट संबंध के कारण हम सभी 'मुक्त' हैं। जगत के लोगों की और हमारी केटेगरी में खूब फर्क है। हमारी पूरी योनि ही अलग है।

ये बात जब तक हमारे मन में नहीं बैठगी; हम आम लोगों की तरह ही जीवन जीते रहेंगे। मैं कई बार कहता हूँ कि जानवर की योनि और मानव योनि में फर्क है, पक्षी की योनि और मानव योनि में फर्क है। इसी तरह ये मानव योनि और प्रभु के डायरेक्ट संबंध के कारण हमारी महामानव की योनि में फर्क है। फिर से कहता हूँ कि संत के माध्यम से हमें प्रभु का जो डायरेक्ट संबंध है–यह बहुत बड़ी बात है। हमारी पूरी केटेगरी अलग हो गई ! लेकिन जैसे कि जानवर को यह पता नहीं लगता। उसे भी लगता होगा कि इंसान हमारी तरह ही खाता है, पीता है, उठता है, बैठता है, सोता है, नाचता है। यूं ये लोक में रहते हुए हम भी मान ही नहीं सकते कि हमारा सेटेन्डर्ड अलग है-योनि ही अलग है। बस, आज के दिन भले हम कोई बात ना समझे, लेकिन ये बात समझ कर जाएं कि **ये संबंध होने के कारण–ये संबंध होने के कारण–ये काकाजी का, पप्पाजी का, स्वामिजी का संबंध होने के कारण हमारी पूरी योनि ही अलग है, हमारी केटेगरी ही अलग है।**

पर, हमें और कई चीजों का प्रभाव ज्यादा रहता है; झाक-झमक, ये-वो ! जैसे कोई हाथी हो–उसे सजाया-करा हुआ हो और माऊन्टएवरेस्ट पर वो खड़ा हो, फिर भी वो क्या है–भूचर ! यानि जमीन पर चलने वाला। भले कितना ही सुंदर भी हो, सजाया हुआ हो, कितनी ही ऊँची हाईट पर हो लेकिन वो उड़ नहीं पाएगा। जमीन से ऊपर उठ नहीं पाएगा। जबकि मच्छर जमीन से एक गज़–एक गीट्टी ही ऊपर उठ जाता हो, लेकिन वो पूरी योनि अलग हो गई। गुजराती में इस बात को एक पोयटिक फोर्म में लिखा है कि–

'हाथी मेरु पे वास करे–सुमेरु पर्वत पर वो रहे, तब भी वो भूचर में गिना जाता है और मच्छर भूतल से एक गज़ ही ऊपर उड़े लेकिन खेचर बोला जाएगा।'

इसी तरह हमारे और ये जो जगत में रहते हैं उनमें इतना फर्क पड़ जाता है। **संत के माध्यम से हमारा सीधा संबंध प्रभु के साथ का है...**

मुझे ये ओ.पी. अग्रवाल का नोटिंग अच्छा लगा... वो पत्रिका में कुछ अन्डरलाईन करके हाईलाईट करके ले आये थे। मतलब वो स्टडी करता है... सब ने कहा–'इस बार का कार्ड बहुत अच्छा है, इस बार का कार्ड बहुत अच्छा है'–लेकिन ध्यान से पढ़ा किसी ने ? थोड़े बहुत होंगे ! जबकि इसने पढ़ा नहीं, **पिछले सालों के कार्ड के साथ इसका स्टडी करा और... एक अच्छी बात करी कि घुमा-फिरा कर हर कार्ड में एक ही बात आती है।** बात उसकी सही है। ज्ञान तो कुछ नया सीखना-सिखाना ही नहीं, वही कहा करना है। खाली भाषा बदल-बदल कर एक ना एक चीज़ कहा करनी है... गुजरात में कहावत है कि दुबले बनिये का अजमाईन पे हाथ ! इस तरह जब भी कुछ बात होगी, मैं यही कहूँगा कि...काकाजी को याद करके 'स्वामिनारायण' भजन करो। वो बलवान हैं, सो हमारा काम कर देंगे। काकाजी का मतलब–हमें जिस संत के प्रति आस्था हो।

लेकिन आज हमें सचमुच में ये समझ कर जाना है कि हम प्रभु के हैं। कैसे भी हैं, हम प्रभु के हैं। जैसे काकाजी कहते–अर्जुनियो कैसा भी था–वो प्रभु का था। भीष्म बड़ा ब्रह्मचारी–तपस्वी था लेकिन प्रभु का नहीं था। हस्तिनापुर के सिंहासन से बंधे रहने की अपनी प्रतिज्ञा की प्रायोरीटी उसे पहले थी। कृष्ण उसकी प्रायोरीटी नहीं थी। युधिष्ठर बड़ा धर्मवान था लेकिन वो प्रभु का नहीं था। 'सत्य'– उसकी प्रायोरीटी थी, 'कृष्ण'–प्रायोरीटी पर नहीं थे। जबकि अर्जुन कैसा भी था–प्रभु का था। उसकी प्रायोरीटी थी–'कृष्ण'! तो आखिर प्रभु ने उसे नारायण स्वरूप बना कर अपने साथ उसकी मूर्ति पुजवाई !

अब सवाल यह उठता है ना कि **हम सच में प्रभु के हैं ?** उसके तीन मेईन लक्षण हैं... प्रभु के हैं तो क्या बेज लगा होना चाहिए ?

...प्रभु का जो हो–उसका **पहला लक्षण यह कि सहज ही एकचित्त से वो प्रभु को याद कर पाए।** सोचना–हम जिसके होंगे ना, कैसे भी संयोग में उसे याद करने में हमें एकाग्रता करनी नहीं पड़ेगी। अरे ! कोई लड़का किसी लड़की को चाहता होगा ना; उसे याद करने में वह नहीं कहेगा कि मैं थोड़ा डिस्टर्ब हूँ, इसलिए वो मुझे याद नहीं आती। एकचित्त से सहज याद कर पाएगा, डिस्टर्बेन्स में भी। तो ये तो हमारा खामुखां लेम एक्सक्यूज़ है–लंगडा बहाना है। 'लंगड़ा' इसलिए कि ये बहाना ज्यादा चल नहीं पाएगा। झूठ है–यूं साबित हो जाएगा...। कई कहते हैं न कि भई ऐसे डिस्टर्बन्स में, ऐसे देशकाल में ऐसी विडम्बना में प्रभु को कैसे याद करें ? ...कोई बीझनेसमेन चाहे कितनी ही डिस्टर्बन्स में हो, लेकिन उसके पास कोई बायर आ गया, तो वह सोचेगा न कि बाकी बात बाद में, पहले ये एटेन्ड कर लूँ... ये सभा भी उसे नहीं रोक पायेगी। सोचगा कि वो सारा गुरुजी से बाद में समझ लूँगा। देखो, उसमें हमारा एक स्वार्थ-मतलब निहित है–लगाव है। तो, यदि हम कहते हैं कि हम प्रभु के हैं, तो-कुछ भी चलता-करता हो, लेकिन उन्हें हम सहज ही एकचित्त से याद कर पाएं... तो, **हम प्रभु के हैं उसका पहला लक्षण यह कि सहज ही हम एकचित्त से प्रभु को याद कर पाएं...**

दूसरा–उसके सच्चे संत के साथ जुड़े रहें। वहीं हमारा मन टिका रहे। उसे छोड़ नहीं पाएं। तो समझ लेना हम सच में प्रभु के हैं। 'अब तो हम घर बैठ कर भजन करेंगे। ये संतों के झमेले में हमें नहीं रहना'–यूं सोचें वे प्रभु के हैं ही नहीं।

तीसरी बात–कौन सी ? मुझे याद नहीं आती.....अन्नकूट की आरती का समय भी हो गया है। तो दोबारा मिलेंगे तब.....

(दूसरे दिन मंदिर के सेवकों से बात करते हुए प.पू. गुरुजी ने तीसरा लक्षण यह बताया था कि–संत का पसंदीदा करा करने की ही उसे आदत पड़ गई हो–जो सच में संत का है !)

–प.पू.गुरुजी

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

ताड़देव की गतिविधियाँ

गुरुहरि योगी बापा के संप, सुहृदभाव, एकता के सूत्र को पायलट स्कीम द्वारा व्यापक में फैलाने-सभी हरिभक्त किसी भी तरह एक-दूसरे के करीब आएं और पारिवारिक भावना उत्पन्न हो इस हेतु प.पू. गुरुजी का हर एक उद्यम होता है। इसी भावना से हर वर्ष अन्नकूट के बाद करीब के शनिवार की एक रात-निजी हरिभक्तों के साथ प.पू. गुरुजी हॉल में ठाकुरजी के समक्ष सोते हैं। करीब सौ-डेढ़ सौ हरिभक्त प.पू. गुरुजी का यह सान्निध्य प्राप्त करने आते हैं। इसे प.पू. गुरुजी **'शबे बारात'** भी कहते हैं।

इस बार भी 11 नवम्बर को प.पू. गुरुजी ने **'शबे बारात'** घोषित करी। जब भी प.पू. गुरुजी किसी भी विषय पर मंदिर में ऐसी बात करते हैं, वह जरुर कुछ ही दिनों में समाचार पत्र या टी.वी. की खबरों इत्यादि में करन्ट टोपिक बनकर आ ही जाती है। जो सांकेतिक है कि ऐसे सत्पुरुष जो कहते हैं वही 'पींडेषु ब्रह्मांडे'-बनकर फैलता है। सो, आश्चर्य की बात कि खबरों में भी आया कि इस वर्ष इस्लाम धर्म में भी 11 नवम्बर को ही 'शबे बारात' घोषित करी गई ! कहते हैं कि इस दिन मुसलमान भी मस्जिद में रात को रुकते हैं–इबादत करते हैं। यह भी कहा जाता है कि इस दिन खुदाताला अपने पाक बंदों की किस्मत लिखते हैं। कैसी सांकेतिक बात है ? सो, इस बार भी करीब सवा सौ हरिभक्त इसमें शामिल होने 'ताड़देव' मंदिर आए !

संजोगवश प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी भी इसी दिन मंदिर आए। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी व प.पू. गुरुजी ने सभी को आशिष प्रदान किए। सभा के बाद सभी ने प्रसाद लिया। तत्पश्चात् आज भी पंजाब शिविर की तरह **'कौन बनेगा करोड़पति' पर आधारित** एक प्रोग्राम रखा था। सो, सभी हरिभक्त उसके लिए एकत्रित हुए। पू. निमित्तस्वामी, पू. आशिष, पू. राकेशभाई शाह इत्यादि ने बहुत ही परिश्रम करके सारे प्रोग्राम का सेटिंग किया था। प.भ. पप्पु (हृदय), प.भ. परेशभाई महेता, प.भ. पुनीत मल्होत्रा, प.भ. दिव्यांग, प.भ. सिद्धार्थ, प.भ. अर्पित ने इसमें भाग लिया। प्रोग्राम में ज्यादातर ऐसे प्रश्न पूछे गए जिससे कि सभी को हमारे संप्रदाय के बारे एवं दिल्ली में सत्संग का जो विकास हुआ है उसकी बुनियादी जानकारी मिले, जैसे–

1. भगवान स्वामिनारायण का प्रागट्य दिन किस धार्मिक उत्सव से जुड़ा हुआ है?

जन्माष्टमी

रामनौमी

शरद्पूर्णिमा

महावीर जयंती

2. इनमें से कौन प.पू. गुरुजी के साथ सबसे पहले आने वाले चार साधुओं में नहीं थे ?

- पू. भाईस्वामी
- पू. उत्तमस्वामी
- पू. धर्मस्वामी
- **पू. दासस्वामी**

3. प.पू. दीदी किस कॉलेज से स्नातक हुए ?

- दौलतराम कॉलेज
- **लक्ष्मीबाई कॉलेज**
- इन्द्रप्रस्थ कॉलेज
- माता सुन्दरी कॉलेज

4. पहले ब्र. स्व. काकाजी महाराज का व्यापार किस वस्तु से संबंधित था ?

- केमिकल्स
- रेडीमेड गारमेन्ट्स
- **फर्टिलाइजर्स**
- ऑटोमोबाइल्स

5. किसने ब्र.स्व. काकाजी महाराज के 'भुल्का और आत्मीयता' के सिद्धान्त को पकड़ कर महत्त्व दिया और उसे गुणातीत समाज में फैलाया ?

- प.पू. दिनकरभाई
- प.पू. साहेब
- **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी**
- प.पू. पप्पाजी

6. ब्र.स्व. काकाजी महाराज की हीरक जयंती कहाँ मनाई गई थी ?

- भारतीय विद्या भवन हॉल
- **षण्मुखानंद हॉल**
- सुंदराबाई हॉल
- प्रेमपुरी आश्रम

7. संप्रदाय में मूल अक्षरब्रह्म का अवतार किसे माना जाता है ?

- सद्. गोपालानंदस्वामी
- सद्. रामानंदस्वामी
- **सद्. गुणातीतानंदस्वामी**
- सद्. मुक्तानंदस्वामी

8. महाराज ने पांचसौ साधुओं को एक साथ परमहंस की दीक्षा कहाँ दी थी ?

- गढ्डा
- राजकोट
- **कालवाणी**
- कारियाणी

9. सद्गुरु रामानंदस्वामी ने महाराज को अपनी गद्दी पर बिठाकर उत्तराधिकारी कहाँ बनाया था ?

- सांरगपुर
- जेतलपुर
- **जेतपुर**
- सूरत

10. **मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को भागवती दीक्षा कहाँ दी गई थी ?**

गोंडल	अमदावाद
डभाण	गढडा

11. **गुजरात में श्रीजी महाराज सबसे पहले कहाँ पधारे ?**

गढडा	वडोदरा
लोज	जूनागढ़

12. **प.पू. काकाजी की माताजी का नाम क्या था ?**

पू. मणीबा	पू. सोनाबा
पू. दीवालीबा	पू. ललिताबा

13. **पू. नीलकंठ वर्णी को कहां पर दीक्षा दी गई ?**

पीपलाणा	अगात्रया
गढडा	लोज

14. **श्रीजी महाराज के पिताजी का वास्तव में नाम क्या था ?**

पू. विष्णु शर्मा	**पू. देव शर्मा**
पू. भोलानाथ	पू. रामप्रतापभाई

15. **ब्र. स्व. काकाजी महाराज का प्रागट्य स्थान कहां है ?**

करमसद	**नड़ियाद**
आणंद	अमदावाद

16. **प.पू. गुरुजी ने कहां से पास की ?**

भाईखला मॉडल स्कूल	**चिल्ड्रन्स एकेडमी**
फेलोशिप स्कूल	न्यू-एरा स्कूल

17. **प.पू. गुरुजी को पार्षदी दीक्षा देने का दिन किस त्यौहार से संबंधित है ?**

शरद्पूर्णिमा	वसन्तपंचमी
रामनौमी	दशहरा

18. **अक्षरज्योति की सर्वप्रथम पाँच बहनों ने कब भागवती दीक्षा ली थी ?**

28 जून 1988 | 12 जून 1988

13 मार्च 1988 | 3 फरवरी 1988

19. **बहनों के लिए रहने की सुविधा नहीं थी तब प.पू. दीदी घर छोड़कर किसके यहां रहती थीं ?**

पू. दालिया साहेब | **पू. विजय बाबू**

पू. नवीनभाई | पू. वच्छराजभाई

20. **ब्र. स्व. योगीजी महाराज का प्रागट्य स्थान कौन-सा है ?**

धर्मज | **धारी**

धर्मपुर | धोलेरा

प्रोग्राम के बीच में ब्रेक देने के लिए प.भ. तपन मजूमदारजी ने अपनी दो-तीन जादुई ट्रिक्स दिखाई। प. भ. वच्छराजभाई व प.भ. राकेशभाई शाह ने चुटकुले सुनाये। प.भ. दिव्यांग ने ब्रेथलेस गाना सुनाया व अमदावाद के 6 वर्षीय प.भ. नंदिश (प.भ. समीर दवे के सुपुत्र) ने भजन सुनाया... प्रोग्राम की शुरुआत में प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी थोड़ी देर बैठ कर फिर प.भ. मल्कानी साहेब के फार्म हाऊस चले गए... प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में करीब साढ़े ग्यारह तक यह प्रोग्राम चला। सभी हरिभक्तों ने खूब आनंद किया जो कि दिव्यता से भरपूर था.....प्रोग्राम के बाद सभी जलपान व अल्पाहार का प्रसाद लेकर रात डेढ़ बजे ऊपर हॉल में सोने गये।

धन्य-धन्य प.पू. गुरुजी कि जो आपसी आत्मीयता के लिए इतना परिश्रम कर रहे है।

[इस पत्रिका में हर एक प्रश्न का सही उत्तर नीले **ब्लाक में दिया गया है।]**

✡ ✡ ✡ ✡ ✡

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 7.12.2000	गुरुवार	–	मोक्षदा एकादशी, व्रत
(2)	दि. 16.12.2000	शनिवार	–	धनुर्मास प्रारंभ
(3)	दि. 21.12.2000	गुरुवार	–	सफला एकादशी, व्रत
(4)	दि. 30.12.2000	शनिवार	–	**प्र.ब्र.स्व. प.पू. साहेब की हीरक जयंती का समारोह (ब्रह्मज्योति-मोगरी, गुजरात)**
(5)	दि. 31.12.2000	रविवार		
(6)	दि. 1.1. 2000	सोमवार		

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY—DELHI
'*Tardeo*', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5953035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393